Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

मंगलेश डबराल (आग और राग के कवि)

डॉ0 राजेश कुमार मिश्र
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,
मर्यादा देवी कन्या पी0जी0 कालेज,
बिरगापुर, हनुमानगंज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 4, Issue 1
Page Number : 94-98

Publication Issue :
January-February-2021

Article History
Accepted : 02 Feb 2021
Published : 09 Feb 2021

सारांश – उम्मीद की थरथराती लौ आखिर बुझ गई। कवि के रूप में मंगलेश डबराल अपने बहुत से अग्रज और प्रसिद्ध कवियों के रहते हुए काफी पहले एक अतुलनीय व्यक्तित्व अर्जित कर चुके थे। इस वाक्य को उनके निधन के अवसर पर की गई भावुक टिप्पणी न समझा जाए कि हिंदी में उनके जैसा कोई दूसरा कवि नहीं था। उनका जन्म 18 मई, 1948 को उत्तर प्रदेश (अब उत्तराखंड) के टिहरी गढ़वाल के काफलपानी गांव में एक साधारण परिवार में हुआ था। बहुत से युवाओं की तरह वे पहाड़ से अपने सपने लेकर नीचे उतरे और देखते–देखते हिंदी के वाम प्रगतिशील–जनपक्षीय पत्रकारिता और साहित्य का एक जरूरी नाम बन गए। उनकी कविता में पहाड़ के कठोर जीवन में बसे पानी के स्त्रोंतो की धार हमेशा बनी रही। इसे आद्रता और करूणा में डूबी उनकी कविता के स्वर में हमेशा महसूस किया जाता रहा।

मुख्य शब्द – मंगलेश, डबराल, आग, राग, कवि।

मंगलेश डबराल के बहुत से समकालीनों के लेखन पर देश में चल रहे क्रांतिकारी संघर्षो खासकर नक्सल आंदोलन या फिर माकपा के असर वाले जनवाद का असर रहा है। मंगलेश का जुड़ाव अपेक्षाकृत क्रांतिकारी संगठन से ही रहा, उनकी कविता का स्वर रेटेरिक के बजाय धीमा पर आश्ताकारी रहा। उन पर अवसाद में ले जाने लिखने के आरोप भी लगाए पर वास्तविकता यह थी कि उनकी कविता उनके असंख्य चाहने वालों के लिए घनघोर निराशा के पलों में सहारा देने वाली बनी रही।''

''उनकी कविता साधारण लोगों, हाशिये की जगहों और मनुष्यता से ओतप्रोत रही। सेक्यूलर मूल्यों के प्रति समर्पित मंगलेश की कविता देश पर बढ़ते फसिज्म और पूंजीवाद के भयानक शिकंजे की शिनाख्त और इसका प्रतिरोध करते हुए अपने शिल्प और कथन में असरदार ढंग से विकसित होती गई। इस लिहाज से वे उन विरले कवियों मे से थे जिनकी रचनाशीलता अंतिम समय तक निखरती गई।''[1]

''मगलेश डबराल का गद्य भी उनकी कविता की तरह अनूठा था और उसमें विचारों की प्रखरता व कविता की सी लय थी। अनुवादक के रूप में भी उन्हें यही शोहरत हासिल रही। उन्हें दुनियाभर में विभिन्न भाषाओं

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

में अनुवाद के जरिये पढ़ा गया और पसंद किया जाता रहा। दुनियाभर के विभिन्न भाषाओं में बड़े रचनाकारों से उनकी गहरी मित्रता थी। मंगलेश साहित्य के अलावा सिनेमा और संगीत के भी गहरे पारखी थे। सिनेमा और संगीत पर उन्होने जब भी लिखा, यादगार लिखा।''[2] मंगलेश डबराल ने साहित्यिक सफर इलाहाबाद से ही शुरू किया था और पत्रकारिता की धार भी उन्हें इलाहाबाद से मिली। इलाहाबाद में उन्होंने अमृत प्रभात में घूमता आइना स्तंभ शुरू किया था, जिसे उनके कवि मित्र वीरेन डंगवाल लिखा करते थे। रामजी पांडेय, मंगलेश डबराल और वीरेन डंगवाल की तिकड़ी को महादेवी जी त्रिदेव कहा करतीं थीं। तब काफी हाउस में मंगलेश भाई नियमित बैठकी करते थे। उन्हें विजय देव नारायण साही जी के संग कविता पर विमर्श करते देखा। उन्हीं दिनों उनका पहला कविता संग्रह' पहाड़ पर लालटेन' प्रकाशित हुआ। जगदीश गुप्त, लक्ष्मीकांत वर्मा, विपिन अग्रवाल और केशवचंद्र वर्मा ने 80 के दशक में ही इस बड़े कवि को पहचान लिया था। उनका न रहना कविता की मुख्यधारा को एक बड़ा नुकसान है।''[3] मंगलेश जी कविता को प्यार करते थे, क्योंकि वे जीवन को प्यार करते थे। जनसत्ता में रहते हुए उन्होंने साहित्यिक पत्रकारिता का मानक रचा। अपनी संगतकार कवियों में उन्होंने गायन में स्वंय संगत किया कलाकार की त्रासदी को मार्मीक अभिव्यक्ति दी है। वे हिंदी कविता का बड़ा आसमान थे। संप्रदायिकता के खिलाफ एक्टिविस्ट कवि के रूप में भी सामने आए थे। कविता को जीवन मूल्यों की तरह ही उन्होंने जिया, कभी ठेठ कवि सम्मेलनी माहौल में भी उन्हें जनता से संवाद करते देखा गया। एक बार भोपाल में उनके कविता संग्रह 'घर का रास्ता' पर विमर्श हुआ। आयोजक थे कवि भगवत रावत उन्होंने कहा था कि घर का रास्ता ही वस्तुतः कविता का रास्ता है, क्योंकि वह नए मनुष्य की प्रतिष्ठा करती है।''[4] उनकी कविता, कविता के व्यस्त ट्रैफिक में बायें हाथ चलने की तमीज भी देती है। उन्होंने कहा है कि जो अपने समय में जुड़कर कलम चलाता है, वही कालजयी भी होता है। शब्द की सत्ता वह बखूबी जानते थे, इसलिए शब्दों संग अंतिम समय तक रहे। अस्वस्थ होने से पहले वह मुंबई के मनीष गुप्ता के हिंदी कविता के मंच से सार्थक संवाद कर रहे थे।

प्रखर कवि पंकज चतुर्वेदी ने एक आयोजन में उन्हें आलीशान कमरे में ठहरा दिया, तो मंगलेश भाई बोले कि मुझे उस कमरे में ले चलो, जहां चारो तरफ किताबें हों। उनकी दौलत किताबें ही थीं, तभीं वह लेखक की रोटी, जैसा विलक्षण गद्य रच सके। कृष्णा सोबती कहती थीं कि लेखक की जिंदगी उसकी मौत के बाद शुरू होती है। उनका लिखा हिंदी कविता के कीर्तिपुरूष शमशेर बहादुर सिंह के शब्दों में काल से होड़ लेता हुआ सा है। पिछले ही महीने हिंदी कविता की लय पर फोन पर ही वे डूबकर बात कर रहे थे। इस कठिन समय में, उनके न रहने पर उम्मीद फाजली साहब की एक शेर इस वाबत याद आ रहा है– ''कल उसकी आँखों ने क्या जिंदा गफ्तग की गुमान तक न हुआ वो बिछुड़ने वाला है।''[5] वर्ष 2020 बीतते बीतते एक बलि और ले गया। विगत आठवें–नौवें दशक में उभरी हम जैसों की पीढ़ी का एक प्रतिनिधी कवि हमसे बिछुड़ गया। मंगलेश डबराल। वे दिन याद आ रहे हैं, जब मंगलेश इलाहाबाद, में हमलोगों के बीच थे। 'अमृत प्रभात' में संपादकीय विभाग से जुडकर उन्होंने उसे हिंदी पत्रकारिता का एक प्रतिमानात्मक स्वरूप दिया था। हमारी मित्रमंडली में नीलाभ, मंगलेश और वीरोन डंगवाल की त्रयी का होना रचनात्मक उत्साह करा अजस्त्र उत्प्रेरक जैसा था। उन्हीं दिनों हमारे कथनाकार मित्र सतीश जमाली ने प्रकाशन का काम शुरू किया था। मंगलेश ने अपने पहले कविता संग्रह 'पहाड़ पर लालटेन' की पांडुलिपि इलाहाबाद में ही तैयार कर ली थी और सतीश जमाली उसे चित्रलेखा प्रकाशन में छापना चाहते थे। तय हुआ था कि दो कविता संग्रह एक साथ प्रकाशित होंगे एक मंगलेश का 'पहाड़ पर लालटेन' और दूसरा राजेन्द्र कुमार का 'ऋण गुणा

ऋण'। यह बात सत् 1977 की है। लेकिन तभी अमृत प्रभात का एक संस्करण लखनऊ से निकलना शुरू हुआ और मंगलेश लखनऊ चले गए फिर वहां से दिल्ली 'जनसत्ता' में। बहरहाल उनके पहले संग्रह से जमाली वंचित रह गए। मंगलेश दिल्ली के हुए पर न वो हम जैसे इलाहाबादियों को भूले और न हम उन्हें।''[6] हमने एक संवेदनशील पत्रकार, कवि खो दिया। वह जब भी मिलते तो इलाहाबाद मे अपनी पत्रकारिता के दिनों को जरूर याद करते। बेबाकी और सहजता से बड़ी बात कह देने वाले साथी का जाना वर्षो दुख देता रहेगा। डॉ. धनंजय चोपड़ा, शिक्षक, इविवि''[7] डबराल ने प्रयागराज में साहित्यिक सांस्कृतिक पत्रकारिता की शुरूआत की। 1978–79 के दौर में शहर का पूरा परिवेश भी साहित्यिक था, लेकिन साहित्यिक सांस्कृतिक पत्रकारिता का स्वरूप अनपढ़ था। इस शहर के लिए साहित्यिक सांस्कृतिक पत्रकारिता गढ़ने और उससे पिरचित कराने का काम मंगलेश डबराल ने ही किया। वह स्वंय एक अच्छे कवि थे और साहित्य की गहरी समझ रखते थे। प्रदीप भटनागर,वरिष्ठ पत्रकार ''[8] मंगलेश डबराल जी का जाना हिंदी जगत की बहुत बड़ी क्षति है। इस रिक्तता को भर पाना असंभव है। फिर भी पत्रकारिता,कविता,अनुवाद,संपादन,सिनेमा,संस्कृति आदि क्षेत्रों में नियमित लेखन से उन्होंने हिंदी साहित्य में जो स्थान बनाया है, वह कालजयी एवं अमिट है। उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि! रविनंदन सिंह, साहित्यकार ''[9] वरिष्ठ पत्रकार और कवि लेखक मंगलेश डबराल का नैनीताल और कुमाऊं विश्वविद्यालय से गहरा नाता रहा है। वे कई दशक से लगभग हर वर्ष नैनीताल और विशेषकर रामगढ़ स्थित महादेवी वर्मा पीठ में आते रहते थे। हाल में 2018 में वे यहां एक कार्यक्रम में आए थे। अंतिम समय तक भी वे इसकी कार्य परिषद के सदस्य थे।

विवि के हिंदी के पाठ्यक्रम के उत्तराखंड के साहित्यकार के पेपेर में डबराल और उनका साहित्य शामिल है जो विद्यार्थियों को उनके व्यक्तित्व और कृतिव में परिचित कराता है। वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. लक्ष्मण सिंह विष्ट बटरोही बताते हैं कि 1998 में जब बटरोही ने विवि के हिंदी के सिलेबस को अपडेट किया था तो उसमें उत्तराखंड के मूर्धन्य कवियों, लेखकों के साथ डबराल को भी जोड़ा था। बटरोही ने बताया कि वे डीएसबी परिसर में कविताओं की दोपहर जैसे विभिन्न आयोजनों में आते रहते थे।

विवि में हिंदी के प्रोफेसर, महादेवी वर्मा पीठ के वर्तमान निदेशक और लेखक शिरीष मौर्य डबराल के बहुत बड़े प्रशंसक और उनके नजदीकी रहे हैं। मौर्य ने बताया कि डबराल हर वर्ष पीठ के कार्यक्रमों में आते थे और हाल ही में उन्होंने जल्द ही आने की इच्छा जताई थी। मौर्य के अनुसार डबराल में सौम्यता के साथ क्त्रसंति की ऊष्मा और बदलाव के लिए कोमलता भरी जिद का अद्भूत मेल था। उनकी कविता की पंक्ति 'जहां तहां जो भी बिखरा था शोर की तरह उसे ही मैं लिखता रहा संगीत की तरह' का मौर्य उनका जीवन दर्शन बताते हैं।''[10] वरिष्ठ साहित्यकार मंगलेश डबराल के निधन की खबरा से साहिबाबाद स्थित जनसत्ता सोसायटी में शौक की लहर दौड़ गई। साहित्य प्रेमियों ने उनके निधन को अपूरणीय क्षति बताया है। चार दिसंबर की रात में उन्हें बेटी व भांजे ने वसुंधरा के अस्पताल से एम्स की आईसीयू में रेफर कराया था। 71 वर्षीय कवि मंगलेश डबराल वसुंधरा की जनसत्ता सोसायटी में पत्नी संयुक्ता डबराल और बेटी अलमा डबराल 30 के साथ रहते थे। वह वर्ष 2012 में गाजियाबाद स्थित वसुंधरा में फ्लैट पर आए थे। बेटा मोहित (36) गुरूग्राम की एक कंपनी में स्क्रिप्ट राइटर हैं। अलमा ने बताया कि 27 नवंबर को मंगलेश डबराल की तबीयत खराब होने पर उन्हें वसुंधरा के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया था। कोविड–19 टेस्ट रिपोर्ट भी पॉजिटिव आई थी। चार दिसंबर की रात में उन्हें एंबूलेंस से एम्स ले जाकर आईसीयू में भर्ती करा दिया

गया। अस्पताल में बुधवार की शाम करीब साढ़े छह बजे उन्हें पहली बार दिल का दौरा पड़ा था और 07:10 बजे दूसरी बार दौड़ा पडने से उनका निधन हो गया। बेटी अलमा ने बताया कि उनके पिता मंगलेश डबराल ने आखिरी बार बात तीन–चार दिन पहले वीडियों कॉल से हुई थी। पिता ने कहा कि वह अब थक चुके हैं।, उन्हें कब अस्पताल से डिस्चार्ज किया जाएगा। अ बवह घर पर आना चाहते हैं। इससे पहले चार दिसंबर की रात में भी अलमा ने पिता को एम्स में रेफर कराने के दौरान उनके पैरों को मसला था। जिससे मंगलेष को काफी आराम हुआ। तब उन्होंने कागज पर लिखकर बेटी से चाय या काफी मांगी थी।

बी0बी0सी0 न्यूज हिन्दी लेख प्रियदर्शन ने बी0बी0सी हिन्दी के लिये 9 दिसम्बर 2020 में डबराल जी के विषय में कुछ तथ्य प्रकाशित कराये ''पहाड़ों की यातनायें हमारे पीछे हैं मैदानों की हमारे आगे जर्मन कवि बर्तोल्त ब्रेख्त की यह काव्य पंक्ति मंगलेश डबराल को बहुत प्रिय थी और अक्सर वे इसे दोहराया करते थे। ऐसा लगता था जैसे पहाड़ों पर न रह पाने और मैदानों को न सह पाने का जो अनकहा दुख है उसमें ये पंक्तियां उन्हे दिलाषा देती हों।''[12] मंगलेश जी के बारे में प्रियदर्शन जी लिखते हैं ''अगर दुख था तो वह उनके भीतर था, वे उसे जीवन के कार्य व्यापार में बाहर नहीं आने देते थे, कातर पड़ना जैसे उन्हें गंवारा नहीं था।''[13] ''70 और 80 के दशकों में नक्सल आन्दोलन से प्रभावित प्रेरित हिंदी कविता को उन्होनें 'पहाड़ पर लालटेन' जैसा अद्भुत संग्रह दिया और बताया कि बहुत तीखे क्रोध और विरोध को कैसे मार्मिक और मद्धिम आवाज में भी पूरी तीव्रता से व्यक्त किया जा सकता है बल्कि उसमें सुलगते कौंधते रुपकों और बिम्बों की मार्फत कैसे अर्थों की जो एक बहुत संवेदनशील जीवन की जुगनु जैसी खुशियों और असमाप्त होते दुखों के बीच बनते थे।''[14] ''लेकिन मंगलेश डबराल के निजी और सार्वजनिक जीवन की यातनायें और परीक्षायें और भी थीं नब्बे के दशक की सोवियत विहीन एक ध्रुवीय दुनियां में जब पूंजीवाद और सांप्रदायिकता के नाखून लगातार लम्बे और तीखे हो रहे थे तो मंगलेश जी फिर अपनी कविता में इनके खिलाफ खड्गहस्त थे।''[15]

संदर्भ सूची

1. अमर उजाला हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, 10 दिसम्बर 2020
2. अमर उजाला हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, 10 दिसम्बर 2020
3. अमर उजाला हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, 10 दिसम्बर 2020
4. अमर उजाला हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, 10 दिसम्बर 2020
5. अमर उजाला हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, 10 दिसम्बर 2020
6. अमर उजाला हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, 10 दिसम्बर 2020
7. अमर उजाला हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, 10 दिसम्बर 2020
8. अमर उजाला हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, 10 दिसम्बर 2020
9. अमर उजाला हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, 10 दिसम्बर 2020
10. अमर उजाला हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, 10 दिसम्बर 2020
11. अमर उजाला हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, 10 दिसम्बर 2020
12. बी0बी0सी0 न्यूज हिन्दी लेख प्रियदर्शन – बी0बी0सी0 हिन्दी के लिये 09 दिसम्बर 2020

13. बी0बी0सी0 न्यूज हिन्दी लेख प्रियदर्शन – बी0बी0सी0 हिन्दी के लिये 09 दिसम्बर 2020
14. बी0बी0सी0 न्यूज हिन्दी लेख प्रियदर्शन – बी0बी0सी0 हिन्दी के लिये 09 दिसम्बर 2020
15. बी0बी0सी0 न्यूज हिन्दी लेख प्रियदर्शन – बी0बी0सी0 हिन्दी के लिये 09 दिसम्बर 2020